भाषा शिक्षा विभाग

Department of Education in Languages

दृश्यांकन

भाषाsangam

a visualscape

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training

निदेशक की कलम से...

I have great pleasure in sharing with faculty, staff of NCERT, and all the viewers of the NCERT website that Department of Education in Languages, National Institute of Education (NIE) has brought out **भाषाsangam-a visualscape.** This is an online magazine which showcases the initiatives of the department in the area of language education. भाषाsangam mirrors a multilingual scenario as it exists in the department and our social sphere. This will help in promoting all languages and thereby strengthening the multilingual and multicultural character of a plural society.

The online magazine will also create a platform for reflection and creative educational pursuits in future.

I convey my best wishes to the Department of Education in Languages, NIE, NCERT, New Delhi for this endeavour.

H.K. Senapaty
Director
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi – 110 016

31.08.2018

संपादक की कलम से...

भाषा की जगह

पढ़ने-पढ़ाने की दुनिया में भाषा की भूमिका को लेकर अक्सर यह दोहराया जाता रहा है कि भाषा तो इसके केंद्र में हैं। शिक्षा संबंधी सभी दस्तावेज़ों में भी यही लिखा जाता रहा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी अलग-अलग तरीके से कई स्थानों पर यह बात फिर कही गई। यह भी कहा गया कि दरअसल सभी विषयों का अध्यापक मूलत: भाषा का अध्यापक ही होता है। तरह-तरह की किताबें बनती रहीं। प्रशिक्षण होता रहा। शोध होते रहे। अलग-अलग दृष्टियों से विचार होते रहे... पर भाषा की समझ को दस्तावेज़ों की कैद से बाहर क्रिया में लाने के लिए मात्र यह सब कुछ काफी नहीं होता।

भाषा पर विचारते समय बार-बार हिंदी कवि ***त्रिलोचन शास्त्री*** के ये शब्द सामने आ जाते हैं।

भाषा की लहरों में जीवन की हलचल है
ध्वानि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है।

दरअसल दस्तावेज़ों में कैद ध्वनि को क्रिया में बदलना होगा। इसके लिए अलग-अलग अवसर और मंच सृजित किए जाने होंगे।

सन् 2005 में एनसीईआरटी में जब ***भाषा शिक्षा विभाग*** स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में आया तो एक बार फिर भाषा को अलग से समझने और विचारने की जगह भी बनी। भाषा के बहुभाषी और देश के बहुसांस्कृतिक स्वरूप में भाषा पर समावेशी दृष्टि से विचार के अवसर सृजित हुए। इस प्रक्रिया में भाषा शिक्षा विभाग ने ऐसे बहुत से कार्य किए, जिनके **दृश्यांकन** (विज़ुअल स्केप) के लिए एक सृजनात्मक मंच की तलाश थी। विभाग द्वारा यह एक छोटा सा प्रयास है जिसके ज़रिये विभाग में बनती भाषायी दृष्टि के साथ-साथ गुज़रे समय की भाषायी स्मृतियाँ तथा इन सबके बीच एक पुल बनाती वर्तमान गतिविधियों का पहला दृश्यांकन ***भाषा-संगम*** के रूप में सामने है।

इसे तैयार करते समय हमारे मन में कोई निश्चित रूप या आकार न था। बस एक चाहत थी कि भाषा की आवाज़ सुनाई पड़ती रहे और उन सब तक पहुँचे जो सुनना चाहते हैं। इसीलिए आकार-प्रकार और स्वरूप के लिहाज़ से इसे खुला ही रखा गया है। यह भी कहा जा सकता है कि खुलापन ही इसकी प्रकृति है।

भाषा संगम के इस अंक को तैयार करने में पूरे ***भाषा शिक्षा विभाग*** ने सहयोग किया है। अकादमिक रूप से सहयोग के लिए हम फारुख अंसारी, प्रोफेसर, ऊर्दू; जतीन्द्र मोहन

मिश्र, प्रोफेसर, संस्कृत; नरेश कोहली, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी; मीनाक्षी खार, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी; शिखा पटवा, जे.पी.एफ., हिंदी; के आभारी हैं तथा तकनीकी सहयोग के लिए रेखा, कु. अनीता, डी.टी.पी.ऑपरेटर और देवाशीष कुमार जायसवाल (system analyst), सीआईईटी के आभारी हैं।

इस खुले मंच पर सुझावों के साथ आप सबका स्वागत है...

संध्या सिंह

इदमन्धन्तम: कृत्स्नं
जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योति:
आसंसारं न दीप्यते।

— *काव्यांदर्श:*

भावार्थ- संपूर्ण त्रिभुवन ही घने अन्धकार से छा जाता, अगर यह भाषारूपी रोशनी इस संसार को आलोकित नहीं करती।

Inside...

निदेशक की कलम से...

संपादक की कलम से...

पहचान
Profile

सृजन
Srijan

पाठ्यपुस्तकों से
Insight...

बोलते शब्द
Sound and Expressions

संवाद
In the Light of...

भाषा स्मृति

Yester Years

Rest in Peace

Brochure

Catalogue and Glimpses